International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(6): 90-93

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(6): 90-93
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-08-2022
Accepted: 18-09-2022

चन्द्रशेखर श्रीवास
आई0 एस0 बी0 एम0 विश्वविद्यालय, छुरा, गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत

शीला खूँटिया
आई0 एस0 बी0 एम0 विश्वविद्यालय, छुरा, गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत

नन्द कुमार कश्यप
डॉ0 सी0वी0रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author:
चन्द्रशेखर श्रीवास
आई0 एस0 बी0 एम0 विश्वविद्यालय, छुरा, गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत

"ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या" का भौतिकी विज्ञानात्मक विश्लेषण

चन्द्रशेखर श्रीवास, शीला खूँटिया, नन्द कुमार कश्यप

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2022.v8.i6b.1911

शोध सारः प्रस्तुत शोध लेख मे भौतिकी विज्ञान के दृष्टिकोण से वेदान्त के सिध्दान्तों का विश्लेषण किया गया है। जीव के चेतनास्तर के आधार पर जगत के प्रातिभाषिक विषयों पर भी तथ्य संकलित किया गया है, जिसके अनुसार वेदान्त में वर्णित ब्रह्म का भौतिकी विज्ञान के ऊर्जा एवं जगत मे समरुपता सिध्द होती है। विज्ञान द्वारा नित नये सृजित सिध्दान्त के लिए वेदान्त–ज्ञान परिकल्पना का हेतु है। विज्ञान, जो भी परिकल्पनाओं के अन्वेषण मे रत रहता है उसका उल्लेख वेदान्त में प्रतिकात्मक रुप से वर्णित हुआ है। जिस प्रकार भौतिकी वस्तुओं में भिन्न दृष्टिकोण से विश्लेषण करने पर उसके लक्षण मे भिन्न–भिन्न भाव संचरित होता है उसी प्रकार मायारुप जगत के भ्रम होने की संभावना को भी निर्दिष्ट लेख में विचार किया गया है एवं शंकराचार्य के "ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या" को वैज्ञानिक दृष्टि से गोचर करने का प्रयास किया गया है। ऊर्जारुपी ब्रह्म के लक्षणों पर भी यथास्थान अन्वेषणात्मक विवेचना किया गया है।

मूल शब्दः जगत मिथ्या, ब्रह्म–ऊर्जा समरुपता।

प्रस्तावना

विज्ञान और आध्यात्म का कार्यक्षेत्र एवं कार्य पद्धति अवश्य ही भिन्न है पर उद्देश्य साम्य है। दोनो ही सत्यान्वेषण की प्रक्रिया मे अलग–अलग मार्गों से प्रगतिशील है। विज्ञानवेत्ता भी इस तथ्य को स्वीकारने लगे है। वस्तुतः विज्ञान आध्यात्म के तत्वदर्शन को ना तो नकारता है और ना ही आध्यात्म के मूलभूत सिध्दांत, विज्ञान के विरोधी है। इस प्रकार का सामंजस्यता वेदांत दर्शन मे परिलक्षित होती है। आधुनिक भौतिकी विज्ञान में सूक्ष्मतम के अन्वेषण की प्रक्रिया मे प्रमाणित हुआ है कि भौतिकी जगत की मूल ईकाई ऊर्जा है जो दोलन करती अवस्थाओं में सदैव विद्यमान है। उसके विभिन्न दोलनों के फलस्वरुप ही कण अस्तित्व रुप मे है। वेदान्त में भी इस ऊर्जारुपी तत्व को आत्मा या ब्रह्म से संबोधित किया गया है जो जगत की प्रारंभिक ईकाई है। उपनिषद् में उल्लेखित इन्द्रियातीत जगत और इन्द्रियजनित जगत के मध्य समानता और असमानता के विश्रृंखलित तथ्यों का अध्ययन करना आवश्यक है क्योंकि विज्ञान हेतु परिकल्पना का मूल आधार परम्परायें तथा वैदिक ज्ञान ही होता है। जिसको प्रमाणित कर विज्ञान नित नये सिध्दान्तों को प्रमाणित करता है।

प्रविधिः– निर्दिष्ट शोधपत्र में अद्वैत वेदान्त और भौतिकी विज्ञान मे समरुपता एवं संबंधता को सत्यापित करने हेतु अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक/ब्याख्यात्मक अनुसंधान विधि का उपयोग किया गया है। इस हेतु द्वितीयक आंकडों की आवश्यकता हुई । द्वितीयक आंकडों का मुख्य स्त्रोत प्रामाणिक दर्शन ग्रन्थों के साथ–साथ वैज्ञानिकों द्वारा प्रामाणिक शोधग्रन्थ भी है। जिसका विश्लेषण करके वेदान्त के रहस्यों को वैज्ञानिक पध्दति मे समेकित करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तावित शोधपत्र पूर्ण रूप से द्वितीयक स्त्रोतों पर निर्भर है जिसमें आंकड़ों के संग्रह के लिए दर्शनग्रन्थ, इंटरनेट, पेपर, जर्नल,और शोध लेख से माध्यमिक आंकड़ो का व्यापक संग्रह कर विश्लेषण किया गया है।

व्याख्या एवं निष्कर्षः– शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त, दार्शनिकता के साथ–साथ जगत संबंधी विश्लेषण और तर्कसंगत प्रतिपादन के कारण मूर्धन्य है। इनके सिध्दान्त ने जीवन के सभी आयामों तथा संस्कृति के सभी रुपों को बौध्दिक चिंतन एवं तार्किक विश्लेषण में प्रभावित किया है। इनके अनुसार केवल ब्रह्म ही उपादान कारण तथा निमित्त कारण है। इसके अतिरिक्त दृष्टिगोचर सभी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष ईश्वर, जड, जीव, जगत चेतन संबंधी नाना नाम रुपात्मक विश्व की सभी वस्तुएँ प्रपंच मात्र है, जो माया के आवरण शक्ति (Concealment power) और विक्षेप शक्ति (Projection power) के कारण सत्यस्वरुप प्रतीत होती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण में अस्तित्व से तात्पर्य उन सभी स्थूल एवं सूक्ष्म अनुभवों से है जो इन्द्रिय एवं बुद्धि द्वारा अनुभव की जा सकती है।

आध्यात्मिक रहस्य अनुभवगम्य नहीं होने के कारण वैज्ञानिकों के लिए प्रारंभ में परिकल्पना मात्र प्रतीत होता है। इन्द्रियातीत अनुभव को प्रत्यक्ष सिध्द नहीं किया जा सकता है। इसलिए वेदांत में ऊर्जारुपी ईश्वर को अनिर्वचनीय कहा गया है। उदाहरणार्थ :– यदि किसी चलचित्र की प्रत्येक स्लाईड को नियत समय पर चलाया जाये तो वांछित दृश्य दिखाई देगा परन्तु यदि प्रत्येक स्लाईड को गति की उच्चतम सीमा पर गति दी जाये तो उस फिल्म के दृश्यों का अस्तित्व नहीं होगा। अतः किसी का होना या ना होना केवल भ्रम मात्र है। अब्यक्त होने का भाव उसके ना होने का लक्षण नही होता अपितु उसके कारण एवं कार्यरुप में अभिब्यक्ति के ना होने का संकेतमात्र है। अर्थात यह भूत संघात अदर्शन से आया और पुनः अदृश्य हो गया।

"अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत। अव्यक्तनिधनानयेव तत्र का परिदेवना।।"[1]

विज्ञान और आध्यात्मः– दोनों का उद्देश्य (मूल की खोज) साम्य है परन्तु सत्यान्वेषण की क्रियाविधि भिन्न–भिन्न है। विज्ञान, ज्ञान की सभी शाखाओं का क्रमबध्द ज्ञान है जबकि इन्द्रियातीत ज्ञान को मूल भाव एवं शब्दों में सहेजा नही जा सकता है। दोनों में मूल भेद यही पर परिलक्षित होता है। आध्यात्म को केवल प्रतीकात्मक भाव में वर्णित किया जा सकता है। यह प्रतीकात्मक ज्ञान प्रत्येक जीव को अपने विचारों एवं बुध्दि के स्तर पर भिन्न–भिन्न प्रतीत होगा क्योंकि गीता में बुध्दि के विषय में बताया गया है कि निश्चयात्मक बुध्दि तो एक ही होती है किन्तु अस्थिर विचार वाले विवेकहीन सकाम मनुष्यों की बुध्दियॉ निश्चय ही बहुत भेदों वाली होती है।

"व्यवसायात्मिका बुध्दिरेकेह कुरुनन्दन, बहुशाखा ह्यनन्ताश्रच बुध्दयोऽव्यवसायिनाम्।।"[2]

शंकराचार्य विरचित विवेक चूडामणि के अनुसार ब्रह्म की तीन सत्ताएॅ है–

1. प्रातिभाषित सत्ता (Appearent Reality) - प्रातिभाषिक सत्ता ब्यक्तिगत होती है जिसमे केवल जीव को ही सत्य का भान होने का अनुभव होता है। किसी अन्य को उसके होने या ना होने का ज्ञान ही नही होता है। जिस प्रकार सुषुप्त ब्यक्ति के लिए उसका स्वप्न सत्य और अनुभवगम्य होता है जबकि अन्य के लिए उसके स्वप्न का कोई अस्तित्व नही होता है तथा जागने या ब्यावहारिक ज्ञान होने पर वह स्वप्न नष्ट हो जाता है उसी प्रकार ब्रह्म और जगत में अन्तर होता है। यह भेद जगत के संदर्भ में ब्रह्मज्ञानी और संसारी मे होती है। प्रातिभाषिक सत्ता को दृष्टिगत करने वाले को प्रायः मनोरोगी या विक्षिप्त की श्रेणी मे रखा जा सकता है।

"वैतथ्यं सर्वभावनां स्वप्न आहुर्मनीषिणः, अन्तः स्थानात्तु भावनां संवृतत्वेन हेतुना।।[3]

स्वप्नावस्था मे सब पदार्थ शरीर के भीतर होते है, अतः स्थान के संकोच के कारण मनीषीगण स्वप्न में सब पदार्थों का मिथ्यात्व प्रतिपादन करते है।

2. ब्यावहारिक सत्ता (Practical Reality) दृब्यवहारिक सत्ता की सत्यता समष्टिगत होती है इसमें इंन्द्रियजनित अनुभव होता है परन्तु जब तक इंन्द्रिय कार्यरुप मे है तब तक ही परिदृश्य का अस्तित्व होता है। इन्द्रियातीत होने पर वह अनुभवातीत भी हो जाता है। इस संसार की भौतिक स्थिति इस सत्ता के परिक्षेत्र मे है। मृत्यु के पश्चात् मृत ब्यक्ति के लिए यह जगत भी अस्तित्वहीन हो जाता है। इस सत्ता को अनुभव करने वाले प्रायः संसारी ब्यक्ति होते है, जिन्हे माया के कार्यशक्ति के कारण अपराज्ञान [4] प्राप्त होता है।

"सर्वात्मना दृश्यमिदं मृषैव, नैवाहमर्थः क्षणिकत्वदर्शनम्।।"[5]

यह दृश्य जगत सर्वथा मिथ्या है । इसकी क्षणिकता देखने में आती है इसलिए यह अहं (मूल) पदार्थ नही हो सकता।

3. पारिमार्थिक सत्ता (Supreme Reality) – पारमार्थिक सत्ता को ब्रह्म (ब्यष्टिगत) माना गया है क्योंकि ब्रह्म का ज्ञान होने पर केवल ब्रह्म ही शेष रहता है (स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति)[6] । ब्रह्म का ज्ञान होने पर दोनो पूर्वरुप सत्ताओं का तिरोभाव हो जाता है। जब तक ब्रह्म का ज्ञान ना हो तब तक समस्त लौकिक ब्यवहार एवं इंन्द्रियजनित ज्ञान, सत्य जान पडता है। ब्रह्म का ज्ञान होने पर ब्रह्म ही शेष रहता है।

"ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रम्हाणा हुतम, ब्रम्हौव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।।"[7]

यज्ञ में अर्पण भी ब्रह्म है, हवन किए जाने वाला द्रव्य भी ब्रम्ह है, कर्ता के रुप में ब्रह्मरुप में आहुति देने वाला भी ब्रह्म है। इस प्रकार ब्रह्मकर्म मे स्थित रहने वाला योगी द्वारा प्राप्त किए जाने वाला फल भी ब्रह्म ही है।

श्यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयंत्यभिसंविशंती तत्विजिज्ञासस्व तत् ब्रह्मेक्तिं।।"[8]

तैत्तीरीयोपनिषद् (3,1) के अनुसार यह जो इस प्रकार का उपादान है, वह प्रत्येक जीवों के द्वारा जानने योग्य है अर्थात् जगत जिससे उत्पन्न और समाहित है वह जानने योग्य केवल ब्रह्म ही है। जगत, प्रपंच का आधार है इसमें अपरा विद्या के कारण सत्य की प्रतीति होती है परन्तु पराविद्या से निर्गुण, निराकार, नित्य, अविनाशी ब्रह्म को जाना जा सकता है। मुण्डकोपनिषद् के अनुसार–श्परा यदक्षरं अधिगम्यतेश [9] । आचार्य केशव काश्मीरी भट्ट ने अपने वेदान्त कौस्तुभ प्रभा नामक ग्रन्थ मे वर्णित किया है कि जीव जगत से पृथक सत्ता नही रखता बल्कि विशेषण विशेष्य संबंध रुप में परस्पर स्व का ही रुप नाम है।

श्जीववत् पृथक स्थित्यनई–विशेषण–विशेषष्योंः स्वरुप स्वभाव अभेदेन च भेद ब्यवहारो मुख्यःश्[10]

वेदान्त और भौतिकी विज्ञान में ब्रह्म की ब्याख्या :– वेदों एवं उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म और पुराणों में उल्लेखित ब्रह्मा शब्द का अर्थ भिन्न–भिन्न है। ब्रह्म शब्द से तात्पर्य निराकार एवं सर्वब्यापी ऐसे ईकाई से है जो अनादि, अनंत, अजन्मा एवं समस्त संसार का मूल कारक एवं अंतिम लक्ष्य है जबकि ब्रह्मा शब्द से तात्पर्य ऐसे

[1]श्रीमद्भगवत्गीता गीताप्रेस गोरखपुर 2।28 पृ0–33

[2]श्रीमद्भगवत्गीता गीताप्रेस गोरखपुर 2।41 पृ0–33

[3]ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गोरखपुर गीताप्रेस, सम्वत्–2075, मा0उप0, पृ0–619, वैतथ्यप्रकरण 2।1.

[4]Medipalli Raju, A Compative analysis of Existing Ancient Indian gurukul Models for bulding a futuristic educational perspective, scholarly Research Journal for interdisciplinary Study (SRJIS), vol 9/67,10,21922/srjis. V9i67.8213 (2021).

[5]मुनीलाल. आद्यशंकराचार्य विरचित विवेक चूडामणि, प्रकाशन 10वॉ, गीताप्रेस गोरखपुर सम्वत्–2013, पृ0– 97, श्लो0 294.

[6]ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075, मु0उप0, पृ0–463, खण्ड 1।5.

[7]श्रीमद्भगवत्गीता गीताप्रेस गोरखपुर 4।24. पृ0–68

[8]ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075, तै0उप0, भृगुवल्ली प्रथम अनुवाक पृ0–1073.

[9]ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075, मु0उप0, पृ0–463, खण्ड 1।5

[10] वेदान्त कौस्तुभ प्रभा, आचार्य केशव काश्मीरी भट्ट,दिल्ली 1928, पृ0 – 3।2।30

साकार स्वरुप से है, जो जगत उत्पत्ति का कर्ता है। आचार्य शंकर का ब्रह्म में कारक भाव है जबकि पुराणों में वर्णित ब्रह्मा में कर्ता भाव विद्यमान है। भौतिक विज्ञान में वर्तमान शोधानुरुप, जगत का मूल कारक ऊर्जा है जबकि कर्तारुप में इसका मूल इलेक्ट्रॉन, प्रोट्रॉन, न्यूट्रॉन जैसे परमाण्विक कण है। ऊर्जारुपी ब्रह्म (ईश्वर) सर्वत्र विद्यमान है परन्तु संसार की रचना परमाणु एवं इसके अवयव द्वारा ब्रह्मा रुप के समतुल्य साकार अवयवों से मानी जा सकती है। अतः दोनो विधाओं (आध्यात्म एवं विज्ञान) में परस्पर समरुपता प्रतीत होती है। वेदान्त दर्शन में आत्मा–परमात्मा संबंधी जो सिध्दान्त दिए गये है उसी में शैजतपदह जैमवतलश [11] की परिकल्पना परिलक्षित होती है। String Theory मे ऊर्जा के लक्षण, ब्रह्म से समरुप गुणधर्म वाले प्रतीत होते है। सांख्य दर्शन के अनुसार ब्रम्हाण्ड उत्पत्ति का मूल प्रकृति है जिसमें विचलन या विकृति होने से सत–रज–तम गुणों की साम्यावस्था में विकार (परिवर्तन) होता है और जगत निर्माण का क्रमिक विकास प्रारम्भ होता है। इसी प्रकार अद्वैत वेदान्त में केवल ब्रम्ह ही संसार का कारण, कर्ता और क्रिया है। कुछ उपनिषदों में ब्रम्ह को निर्गुण, निराकार एवं सर्वब्यापी माना गया है जबकि कुछ में सगुण साकार की मान्यता है। आधुनिक भौतिकी विज्ञान के स्ट्रिंग सिध्दांत के अनुसार समस्त संसार केवल ऊर्जा का ही रुप है।

"मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना, मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्यवस्थितः।।"[12]

मुझ निराकार परमात्मा से यह सब जगत जल से भरे बरफ के सदृश्य परिपूर्ण है और सब भूत मेरे अर्न्तगत संकल्प के आधार है।

"यच्चापि सर्वभूतानां बींज तदहमर्जुन, न तदस्ति बिना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्।।"[13]

जो सब भूतों की उत्पत्ति का कारण है वह मैं ही हूँ क्योंकि ऐसा चर या अचर कोई भूत नहीं है जो मुझसे रहित हो।

"ऊँ ईशावास्यमिदम् सर्वयत्किश्च जगत्यां जगत्।।"[14]

जगत् मे जो कुछ स्थावर–जंगम संसार है वह सब ईश्वर से आच्छादित है।

वेदान्त और भौतिकी विज्ञान में सत्य की ब्याख्या :–सत्य से तात्पर्य है कि जो भूत, वर्तमान और भविष्य में परिवर्तनहीन हो अर्थात् जो काल के प्रभाव से परे हो। सत्य वह है जिसका स्वरुप, गुण, कर्म अथवा लक्षण समय के साथ विकृत नहीं होता है। शंकराचार्य के अनुसार शत्रिकालाबाधितं सत्यत्वम्श अर्थात् जो सदैव तीनों कालों मे एक रस, अपरिवर्तनशील, अखण्ड और अपरिणामी होकर बाधारहित हो, वही सत्य है। ऊर्जा संरक्षण के नियमानुसार, ब्रह्मरुपी ऊर्जा को ना तो उत्पन्न किया जा सकता है और ना ही नष्ट किया जा सकता है बल्कि जिस वस्तु में ऊर्जा है उस वस्तु में निहित ऊर्जा के स्वरुप को परिवर्तित किया जा सकता है ।[15]

न जायते म्रियते वा कदापि न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः,अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।[16]

आत्मा किसी काल मे भी न तो जन्मता है और ना तो मरता है । यह अजन्मा, नित्य सनातन और शाश्वत है। जैसे रासायनिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में, विद्युत ऊर्जा को मैकेनिकल ऊर्जा में, मैकेनिकल ऊर्जा को चुम्बकीय ऊर्जा में, चुम्बकीय ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में आदि। इन सभी में ऊर्जा विकृत नही हो रही है अपितु ऊर्जा हेतु जिन साधनों का प्रयोग किया जा रहा है उनके गुण एवं प्रकृति में परिवर्तन हो रहा है। ऊर्जा तो सदैव ही ऊर्जारुप में सत्य स्वरुप विद्यमान है। बिग बैंग सिध्दांत के अनुसार समय का आयाम भी महास्फोट के पश्चात ही अस्तित्व में आया है स्पष्टतः समय भी सत्य नही है क्योंकि इसका प्रारंभ बिग बैंग सिध्दांत के बाद ही हुआ है और जिसका जन्म (आदि) है उसका अन्त (चरम) भी अवश्य ही है (जातस्य ही ध्रुर्वोमृत्युं ध्रुवम् जन्ममृतस्य च)। समय का विस्तार भी अंतरिक्ष के विभिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न है।[17] अतः एक मानक के रुप में समय का आयाम स्थानानुरुप समत्वभाव में नही है।

वेदान्त और भौतिकी विज्ञान में जगत की ब्याख्याः– जगत से अभिप्राय ऐसे परिवेश से है जो इन्द्रियजन्य अनुभव को परिभाषित करता है। प्रत्येक ब्यक्ति का परिस्थिति विशेष मे अपना स्वतंत्र संसार होता है। जैसे एक विक्षिप्त (पागल) ब्यक्ति का संसार एवं जनसामान्य ब्यक्ति के संसार में भिन्नता होती है। एक दुःखी ब्यक्ति का संसार दुःखमय तथा सुखी ब्यक्ति का संसार सुखमय होगा। जो समय के कालक्रम में प्रतिक्षण परिवर्तित होता रहता है। चूंकि मानव जीवन विकारों से पूर्ण होने के कारण रुपांतरित होता रहता है अतः उसका संसार भी परिवर्तित होता रहता है। इन्द्रियातीत एवं इन्द्रियजनित अनुभव जो स्थायी नहीं होते परन्तु वास्तविक प्रतीत होते है, जगत कहलाता है। उदाहरणार्थ :– नींद में स्वप्न आने पर ब्यक्ति इन्द्रियातीत होकर भी उसमें स्वयं का अस्तित्व को अनुभव करता है अतः तत्कालिन समयावधि में वह उस चेतना द्वारा अपने मैं होने के भाव को ब्यक्त करने हेतु जगत का निर्माण कर लेता है जो क्षणिक ही सही परन्तु स्वयं में पूर्ण होता है। जागृत अवस्था मे आने पर सुषुप्ति का वह संसार विलोपित होकर मिथ्यारुप हो जाती है और हमारा संसार इंन्द्रियजनित संसार मे परिवर्तित हो जाता है। इसी प्रकार ब्रह्मरुपी ऊर्जा में परिवर्तन नही होता अपितु केवल उनके उन स्वरुपों में भेद होता है जिसका सृजन उससे हुआ है इसी प्रकार जगत में समयानुसार परिवर्तन होता रहता है।

वेदान्त और भौतिकी विज्ञान में मिथ्या की ब्याख्याः– सत्य का विलोम शब्द मिथ्या है अतः क्षणिक एवं प्रतिपल अपने स्वरुप में विकृति अथवा भेद प्रदर्शित करने वाला मिथ्या होता है। यह अनुभवजन्य एवं अनुभवातीत दोनों ही हो सकता है क्योंकि मन के अनुरुप एवं प्रकृति कि गुणों के कारण भ्रम को सत्य मान लिया जाता है। जैसे यदि रस्सी में सर्प के स्वरुप का चिंतन हो तो ब्यक्ति को रस्सी सर्प प्रतीत होगी परन्तु उसमें सर्पभाव का होना मिथ्या है। इसमें रस्सी सर्प प्रतीती का अधिष्ठान है। मिथ्या से तात्पर्य जो किसी विषय में विशेष्य के विशेषण में विचारानुरुप दृष्टिगत दोष उत्पन्न करता है। क्वाण्टम भौतिकी में क्वाण्टम इंटेगलमेंट में जब तक किसी पार्टिकल को आर्ब्जव नही किया जाता है तब तक वह अपने सभी संभावित स्तर पर होता है। अर्थात वह मिथ्याभाव को धारण किया होता है।[18] ब्लैक कैट

[11] Zwiebach B. A First Course in String Theory, Cambridge: Cambridge University Press, 2nd ed. (2009).

[12] श्रीमद्भगवत्गीता गीताप्रेस गोरखपुर 9।4 पृ0–118

[13] श्रीमद्भगवत्गीता गीताप्रेस गोरखपुर 10।39 पृ0–139

[14] ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075, ई0उप0, पृ0–25, 1।1

[15] Medipalli Raju, A Compative analysis of Existing Ancient Indian gurukul Models for bulding a futuristic educational perspective, scholarly Research Journal for interdisciplinary Study (SRJIS). 2021;Vol 9/67.

[16] श्रीमद्भगवत्गीता गीताप्रेस गोरखपुर 2।20 पृ0–31

[17] Kanade Vijay A., The Scientific Conceptuation of Time dilation, International journal of Scientific & Engineering Research. 2014;5(7): ISSN 2229-5518.

[18] Pal sohan, batra priya, krishnanda tanjung, experimental localization of quantam entanglement through monitored classical mediator, quantam, (2020), DOI: https://doi.org/10.22331/q-2021-06-17-478, 5(1): 478.

पैराडाक्स मे भी जब तक बिल्ली बाक्स में बिना आब्जर्वेशन (अवलोकन) के बंद होती है तब तक वह जीवित अथवा मृत दोनो अवस्था में हो सकती है। जो एक मिथ्या भाव है। क्योंकि जब किसी वस्तु का अवलोकन किया जाता है तब विषय को विशेषण को प्राप्त हो जाता है।[19] इस प्रकार विश्व, ब्रम्ह का विवर्त मात्र है। अद्वैत वेदांत के शिरोमणी एवं संस्थापक आचार्य गौणपादाचार्य ने अपनी रचना माशुक्यकारिका में चार अध्याय मे क्रमशः आगम–प्रकाशन, वैतथ्य–प्रकरण, अद्वैत–प्रकरण एवं अलता शान्ति –प्रकरण में जगत एवं इसके उत्पत्ति संबंधी तथ्य प्रदान किए है। इसके दूसरे अध्याय में सृष्टि को माया के कारण स्वप्न एवं भ्रम बताया गया है जबकि तीसरे अध्याय में सर्वोच्च सत्ता कि रुप में ब्रह्म को संबोधित किया गया है। आचार्य शंकर ने भी इसी मत का अनुसरण करते हुए रचित ग्रन्थ विवेक चूडामणि में "ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या" जैसे सिद्धांतों का चिंतन किया। इसके अनुसार जगत एवं ब्रह्म में कतिपय भिन्नता प्रतीत हो सकती है परन्तु चिंतन की गहराईयों में दोनो में केवल स्वरुपीय भिन्नता है। जैसे इलेक्ट्रॉन में ऋणात्मक आवेशीय गुण विद्यमान है परन्तु इन गुणों का मूल स्त्रोत ऊर्जा की वह अवस्था से है जो इलेक्ट्रॉन के भीतर दोलित हो रही है। मूल रुप से ऊर्जा से ही इलेक्ट्रॉन की ब्युत्पत्ति हुई है परन्तु स्वरुप विकृति मे ऊर्जा का परिवर्तन उसे भिन्नता प्रदान करता है। प्रत्येक परमाणुओं का मूल में ऊर्जा एकविमीय दोलन स्ट्रिंग के रुप में विद्यमान है। इन्ही दोलनों में भिन्नता के फलस्वरुप भिन्न–भिन्न परमाण्विय कणों का सृजन होता है। ब्रह्म तत्व भी उसी प्रकार मूल में स्थित होकर जगत का निर्माण करती है जो विकृत होकर ब्रह्म से भिन्न जान पड़ती है।

उपसंहार :–शंकराचार्य ने ब्रह्म और जगत की दो स्वतंत्र सत्ता को अस्वीकार किया है वरन् ब्रह्म द्वारा ही माया के आवरण रुप में जगत की सत्ता वर्णित की है। ब्रम्ह सूत्र (1,1,2) के अनुसार श्जन्माद्यस्य यतःश[20]। मकड़ी स्वयं अपने लार से जाल का निर्माण करती है और पुनः उसे निगल जाती है। जिस प्रकार मकड़ी एवं जाल दोनों की स्वतंत्र सत्ताएँ परिलक्षित होती है इसमें उपादान कारण (जाल) और निमित्त कारण (मकडी) दोनो में भेद नही है।[21] उसी प्रकार ब्रह्म और जगत का ब्यवहार है। भौतिकी विज्ञानी भी ऊर्जा को प्रकाश एवं कण में वर्णित करते है जबकि दोनो ही ऊर्जा के रुप है यदि कण को प्रकाश की गति से वेग दिया जाए तो कण का द्रब्यमान शून्य होकर कण की प्रकृति प्रकाश की हो जायेगी। इसी तारतम्य में भौतिकी विज्ञानी डी–ब्रांग्ली के अनुसार कण के द्वैत प्रकृति का वर्णन करते है कि ऊर्जा भी समयानुरुप कण एवं तरंग दोनों के ही गुण प्रदर्शित करते रहते है।[22] (प्रकाश द्रब्यमान उर्जा संबंध म्त्रडब्)। इसे ही उपनिषदों में द्विलक्षणा अर्थात् सगुण एवं निर्गुण की संज्ञा दी गई है। इस प्रकार अद्वैत वेदान्त की यह चिंतनधारा आधुनिक वैज्ञानिकों को उस परम तत्व की खोज की ओर अग्रेसित करने हेतु एक परिकल्पना प्रदान करती है जिसे वेदों में ब्रह्म एवं ईश्वर माना गया है।

अभिस्वीकृति :– हम सभी लेखक बहुमूल्य सहायता एवं कुशल निर्देशन प्रदान करने हेतु डॉ0 एन0 कुमार स्वामी, अधिष्ठाता (अनुसंधान एवं विकास), आई0एस0बी0एम0 विश्वविद्यालय, छुरा, गरियाबंद, छ0ग0 493996 के आभारी है।

संदर्भ सूची :–

1. श्रीमद्भगवत्गीता, गीताप्रेस गोरखपुर, 2।28, 2।41, 4।24, 9।4, 10।39, 2।20
2. ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गोरखपुर गीताप्रेस, सम्वत्–2075, मा0उप0,पृ0–619, वैतथ्यप्रकरण 2।1
3. Medipalli Raju. A Compative analysis of Existing Ancient Indian gurukul Models for bulding afuturistic educational perspective,scholarly Research Journal for interdisciplinary Study(SRJIS). 2021;9/67.
4. मुनीलाल.आद्यशंकराचार्य विरचित विवेक चूडामणि, प्रकाशन 10वॉ,गीताप्रेस गोरखपुरसम्वत्–2013, पृ0–97, श्लो0 294
5. ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075, मु0उप0, पृ0–553, 3।2।9
6. ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075, तै0उप0 भृगुवल्ली प्रथम अनुवाक पृ0–1073,
7. ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075, मु0उप0, पृ0–463, 1।5
8. Zwiebach B. A First Course in String Theory, Cambridge: Cambridge University Press, 2nd ed., 2009.
9. वेदान्त कौस्तुभ प्रभा, आचार्य केशव काश्मीरी भट्ट,दिल्ली 1928,पृ0 –3।2।30
10. ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075, ई0उप0, पृ0–25, 1।1
11. Motsanos Giottis. The law of conservation of Energy, 2017. DOI: 10.4172/2476-2296.1000172
12. Kanade Vijay A. The Scientific Conceptuation of Time dilation, International journal of Scientific & Engineering Research. 2014;5(7). ISSN 2229-5518.
13. Pal Sohan, Batra Priya, Krishnanda Tanjung. Experimental Localization of quantam entanglement through monitored classical mediator, quantam. DOI: https://doi.org/10.22331/q-2021-06-17-478. 2020;5(1):478.
14. Bierman Dick, Whitmarsh Stephen. Schrodinger's Cat: Empirical Research into the Radical Subjective solution of the measurement problem Weblink, 2006. https://www.researchgate.net/publication/46690351 visited on :18 Nov,2022.
15. ब्रम्ह सूत्र शांकरभाष्यार्थ गोरखपुर गीताप्रेस 1,1,2 पृ0–23.
16. ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075, श्वेताश्वरोपनिषद् 6।10 पृ0–1316.
17. Jean Louis van belle. De Broglie's matter-wave : concept and issue, 2020, DOI: https://10.13140/RC.2.2.21540.91527/2

[19]Bierman, Dick & Whitmarsh Stephen. (2006). Schrodinger's Cat: Empirical Research into the Radical Subjective solution of the measurement problem Weblink: https://www.researchgate.net/publication/46690351 visited on:18 Nov,2022.

[20]ब्रम्ह सूत्र शांकरभाष्यार्थ गोरखपुर गीताप्रेस 1,1,2 पृ0–23.

[21]ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यार्थ, गीताप्रेस गोरखपुर, सम्वत्–2075. श्वेताश्वरोपनिषद् 6।10 पृ0–1316.

[22] Jean Louis van belle, De Broglie's matter-wave : concept and issue, 2020, DOI: https://10.13140/RC.2.2.21540.91527/2